

EMOTIONAL STUDY OF CLOUDS IN PAHARI STYLE (पहाड़ी शैली में बादलों का भावनात्मक अध्ययन)

Kiran Sharma^{a*}

^a Research Scholar, Mangalayatan University Beswan Aligarh

^aEmail: kiransharma826907@gmail.com

Abstract

The theme of "clouds" in Indian painting begins with the story of the peacock, the poem "Megadoot," and the allegory of love. Kalidasa's "Megadoot" depicts clouds as "messengers" or symbols of emotion. In the history of painting, the visual depiction of clouds began with Gupta sculpture and art in the 5th-6th centuries. The "Chitrastotra" chapter of the Vishnudharmottara Purana also specifically instructs the depiction of heavy dark clouds, flashes of lightning, bright skies, and birds flying as characteristics of the rainy season. Furthermore, we find depictions of clouds in Cave No. 1 and Cave No. 17 of the Ajanta Caves. Clouds are also depicted in the Ellora and Badami caves, where figures of gods and apsaras are depicted flying through clouds. Medieval miniatures, especially the Barahmasa and Ragamala paintings, have a more emotional depiction of clouds. The 12th-century Geeta Govinda, composed by Jayadeva, describes the union and separation of Krishna and Radha through the rainy season and clouds. The image of dark, foaming clouds has become extremely popular. The Pahari style, which developed in the royal courts of Himachal and Punjab in the 17th and 18th centuries, not only adopted clouds as narrative motifs in Radha-Krishna poetic scenes and the Barahmahasa series of paintings, but also depicted them as emotional symbols of love, separation, and union. Particularly in the Kangra style, which developed from Guler, the cloud form is visually and emotionally captured through white lightning, fine lines, and subtle color. The aim of this research paper is to understand clouds not just as a weather backdrop, but as an emotionally charged language within the Pahari style of painting. This aims to elevate clouds from mere visualization to presenting them as a significant means of emotional communication and narrative visualization.

भारतीय चित्रकला में " बादल " विषय की शुरुआत मोरकथा, मेघदूत काव्य और वात्सल्य अलंकारों से होती है। जहाँ कालिदास द्वारा रचित मेघदूत में बादलों को "दूत" या भाव संकेतक के रूप में चित्रित किया गया है। चित्रकला के इतिहास में बादलों का दृश्यमान चित्रण 5वीं-6वीं सदी ई.पू. की गुप्तकालीन मूर्तिकारिता और ग्रंथकला से आरम्भ हुआ। विष्णुधर्मोत्तरा पुराण के चित्रसूत्र अध्याय में भी विशेष रूप से वर्षा ऋतु की लक्षण के रूप में भारी काले बादल, बिजली की झलक, चमकदार आकाश, पक्षियों का उड़ना आदि को चित्र में अंकित करने का निर्देश मिलता है। इसके साथ ही हमें अंजना गुफा, में भी बादलों का अंकन गुफा सं 1 व गुफा सं 17 में देखने को मिलता है। साथ ही एलोरा व बादामी गुफाओं में भी बादलों का अंकन किया गया है। जिसमें देवताओं व अप्सरों की आकृतियों को बादलों में उड़ते हुए चित्रित किया गया है। मध्यकालीन लघुचित्रों में भी बादलों का चित्रण विशेष रूप से बारहमासा व रागमाला चित्रों में अधिक भावात्मक ढंग से हुआ है। 12वीं शताब्दी में जयदेव द्वारा रचित गीतगोविंद में वर्षा ऋतु और मेघों के माध्यम से कृष्ण और राधा के मिलन-विरह का वर्णन मिलता है। जिसमें काले, फेन-झरते बादलों का दृश्य बेहद लोकप्रिय हुआ है। 17वीं-18वीं सदी में हिमाचल और पंजाब के राजदरबारों में विकसित हुई पहाड़ी शैली ने न केवल राधा-कृष्ण काव्य दृश्यों व बारहमाहासा चित्र शृंखलाओं में बादलों को कथात्मक भाव- संकेतक के रूप में अपनाया, अपितु उन्हें प्रेम, विरह, मिलन के भावात्मक रूप में भी चित्रित किया विशेषतः गुलेर से विकसित कांगड़ा शैली में सफेद बिजली - रेखाएं, बारीक रेखा और रंगों की सूक्ष्मता के माध्यम से बादल रूप को दृश्य - निर्माण और भावपरक ढंग से उकेरा गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य बादलों को सिर्फ मौसम की पृष्ठभूमि न मानकर, बल्कि पहाड़ी चित्रशैली में भाव-प्रेरक भाषा के रूप में समझना है। जो बादलों को केवल प्राकृतिक दृश्यता से निकालकर, उन्हें भावनात्मक संवाद और कथा दृश्यता की महत्वपूर्ण साधना के रूप में पेश करना है।

Keywords: Pahari style, depiction of clouds, emotional, aesthetic

पहाड़ी शैली, बदलों का अंकन, भावात्मक, सौन्दर्यात्मक

* Corresponding author.

प्रस्तावना

भारतीय चित्रकला के इतिहास में लघु चित्रकला की परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह केवल दृश्य सौन्दर्य तक सीमित नहीं रही अपितु उसमें जीवन के भाव, संवेदनाओं और वातावरण की भी सजीवता प्रकट होती है। विशेष रूप से पहाड़ी शैली में विकसित चित्रों में प्रकृति का अत्यधिक भावनात्मक और सौन्दर्य पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है।

हिमालय पर्वतमाला की निचली पहाड़ियों के आसपास विकसित चित्रकला शैली को पहाड़ी कला शैली के रूप में जाना जाता है। इसे पंजाब और गढ़वाल पहाड़ियों के राजपूत रियासतों में संरक्षण प्राप्त था यह सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित हुई और उन्नीसवीं शताब्दी तक फली-फूली। पहाड़ी चित्रकला के चार प्रमुख केन्द्र थे रावी नदी पर बसोहली, बालगंगा नदी पर गुलेर, रावी पर चंबा और व्यास नदी पर कांगड़ा। इस शैली की अद्वितीयता इसमें प्रयुक्त तकनीक मनोभाव और दृश्य संरचना में निहित होती है।

हिमालयी क्षेत्र की वादियों में विकसित इस शैली ने कलाकारों को प्रकृति के अनेक रूपों से प्रेरणा दी। पहाड़ी चित्रकला में प्रकृति का चित्रण – विशेषकर पहाड़ियों, नदियों, वृक्षों और बादलों का समावेश होता है चित्रों में बारिश में नाचता हुआ मोर, पेड़ की टहनी पर बैठा पक्षी, आकाश में बादलों का अंकन या झरने का पानी पीते हुए हिरण जैसे दृश्य दर्शक को एक शांत और भावपूर्ण अनुभव प्रदान करते हैं जिसमें बादलों का चित्रण विशेष रूप से परिसीमित स्थान में सामंजस्यपूर्ण रूप से सौन्दर्य, रंग, संरचना भाव और प्रतीकात्मकता प्रदान करता है। बादलों का चित्रण पौराणिक और धार्मिक संदर्भों में भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार पहाड़ी शैली की लघु चित्रकलाओं में हिमालय दृश्यों का चित्रण अत्यंत सूक्ष्म और भावात्मक होता है।

यहाँ के कलाकारों ने केवल नायक-नायिका के रूप या श्रृंगार प्रसंग का ही अंकन नहीं किया, बल्कि वातावरण को भी भावनाओं का सहभागी बना कर चित्रण किया। इन्हीं में से एक प्रमुख तत्व है। " बादल का चित्रण बादल पहाड़ी चित्रों में केवल आकाश की शोभा नहीं बढ़ाते बल्कि वे रसात्मकता, वातावरण निर्माण और भावनाओं की तीव्रता को प्रकट करने वाले माध्यम के रूप में उपस्थित होते हैं। कहीं वे नायक-नायिका के मिलन का संदेश लेकर आते हैं। तो कहीं विरह की व्यथा को और गहरा बना देते हैं।

हिमालयी पारंपरिक कला में पवनदेव देवताओं के आकाशीय उपस्थिति दिव्यताओं की कुहासभित, पृष्ठभूमि जैसे विषय बादलों से जोड़े जाते हैं। इससे दृश्य सौन्दर्य के साथ-साथ आध्यात्मिक रचनात्मकता भी जुड़ती है।

इन पहाड़ी चित्रों में बादलों का चित्रण तकनीकी और भावात्मक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। बसोहली शैली में बादल ज्यादातर तीव्र, प्राथमिक रंगों में सपाट पृष्ठभूमि की ऊपरी पट्टी में चित्रित होते हैं जो दृश्यों को एक गूढ़, प्रतीकात्मक और मूर्त सौन्दर्य प्रदान करते हैं। ये प्रारंभिक चित्र पट्टिका जैसे होते हैं, जहां बादल कतिपय रूप से दृश्य के पीछे दूरी और प्रतीक्षा की भावना जगाते हैं इसके विपरीत, गुलेर और कांगड़ा जैसी शैलीगत परंपराओं में बादलों का चित्रण कोमल रेखा, पारदर्शी रंगों और शीतल टोनल शेडिंग से किया जाता है, जिससे दृश्य में सौम्यता, गहराई, और भावात्मक संवेदनशीलता उत्पन्न होती है चित्रों में बादलों के सौन्दर्य का महत्व केवल दृश्य सजावट तक सीमित नहीं है, बल्कि ये भावात्मक और प्रतीकात्मक सेतु भी बनते हैं- जो रागमाला, रसमंजरी या रीतचक्र धारा के विषयों में मानसून, प्रेम की प्रतीक्षा और प्रकृति की आयोजनात्मक कहानी को जोड़ते हैं। वहीं कांगड़ा शैली के चित्रों में जहां राधा-कृष्ण की लघु-कहानियों को प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ बादल दृश्य की पृष्ठभूमि में न केवल वातावरण निर्मित करते हैं, बल्कि प्रेम की उत्कंठा व प्राकृतिक सौन्दर्य के संवाद भी स्थापित करते हैं।

यद्यपि भारतीय लघु चित्रकला पर अनेक शोध हुए हैं, परन्तु " पहाड़ी शैली में बादलों का भावनात्मक अध्ययन एक ऐसा विषय है जिस पर अभी भी गहन अध्ययन की आवश्यकता है। अधिकांश अध्ययनों में रंग, रेखा, या विषयवस्तु पर ध्यान दिया गया है, परन्तु बादलों की भावनात्मक भूमिका और रस-निर्माण में योगदान का विशेष अध्ययन अपेक्षित है। यह एक ऐसा विषय है। जो तकनीक, प्रतीकात्मकता, सौन्दर्यात्मक और भावात्मक सुंदरता का मिश्रण स्थूल दृश्य सौन्दर्य को गहराई और संदर्भ से जोड़ता है, जिसका सम्यक् अध्ययन ऐतिहासिक, विधात्मक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है इस शोधपत्र का उद्देश्य यही है कि पहाड़ी शैली की लघु चित्रकला में बादलों के भावनात्मक प्रयोग और कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन किया जाए।

भारतीय काव्य परंपरा और बादलों का भावनात्मक प्रयोग

भारतीय कला परम्परा में लघु चित्रकला का अपना एक विशेष महत्व रहा है। प्राचीन भारत में अजंता, एलोरा भित्ति चित्रों से लेकर मध्यकालीन पांडुलिपि चित्रण और फिर क्षेत्रीय शैलियों तक यह परंपरा निरंतर विकसित होती रही है। विशेषकर 16 वीं से 19वीं शताब्दी के मध्यकाल में लघु चित्रकला ने अपनी समृद्ध परंपरा स्थापित की। इन लघु चित्रकला परंपराओं में राजस्थान और पहाड़ी शैली प्रमुख रही हैं। जहाँ राजस्थानी चित्रों में वीर रस, दरबारी जीवन और शान-शौकत दिखाई जाती है। वहीं पहाड़ी शैली में प्रकृति, श्रृंगार और भक्ति का अद्वितीय सामंजस्य दिखता है। 17वीं-19वीं शताब्दी के बीच हिमालयी क्षेत्र में अनेक छोटी-छोटी रियासतें थीं। वहाँ के राजाओं और दरबारों ने कला को संरक्षण दिया। इस वातावरण में गढ़वाल, बसोहली, कांगड़ा, चंबा और मंडी जैसी अनेक उप शैलियाँ विकसित हुईं।

भारतीय काव्य और चित्रकला दोनों में बादलों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संस्कृत साहित्य में कालिदास द्वारा रचित मेघ दूत व जयदेव द्वारा रचित गीत गोविंद और भक्ति काव्य में बादलों का विशेष उल्लेख मिलता है। कवियों ने बादलों को दूत, साथी, प्रेम के प्रतीक और ईश्वर की उपस्थिति के संकेत के रूप में चित्रित किया है। चित्रकला में भी बादलों ने समान भूमिका निभाई। विशेषकर पहाड़ी लघु चित्रकला में।

पहाड़ी शैली की उप शैलियों में धार्मिक, पौराणिक, और काव्य आधारित चित्रों का निर्माण हुआ। विशेष रूप से जयदेव का गीत गोविंद बिहारी सतसई और भागवत पुराण जैसे ग्रंथों पर आधारित चित्रों में प्रकृति और भावनाओं का गहरा मेल दिखाई देता है। भक्तिकाव्य में बादल ईश्वर की शक्ति, कृपा और दैवी संरक्षण के रूपक बने हैं। इन काव्य परंपरा ने पहाड़ी कलाकारों को प्रेरणा दी। उन्होंने साहित्यिक प्रतीकों को दृश्य रूप में उतारा और बादलों के माध्यम में भावों की अनुभूति को गहन बनाया। यह केवल चित्रांकन का ही विषय नहीं है। बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म और दर्शन की

अभिव्यक्ति का कठोर माध्यम भी बनी हैं। इसलिए इस शैली में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि या सजावटी तत्व नहीं हैं, बल्कि उसमें पात्रों की भावनाओं, मनोदशा और कथा-वस्तु की सक्रिय भागीदारी होती हैं।

पहाड़ी शैली, विशेष रूप से कांगड़ा, गढ़वाल और बसोहली जैसी उपशैलियों में, बादल भावनात्मक अभिव्यक्ति का अत्यंत सशक्त माध्यम बन जाते हैं। वे केवल वर्षा के सूचक नहीं, बल्कि विरह, मिलन, प्रेम, उत्कंठा और विषाद जैसे भावों को उकेरने वाले प्रतीक भी होते हैं। गीतगोविंद, बिहारी सतसई, रामायण, महाभारत और लोककथाओं पर आधारित इन चित्रों में बादल नायक-नायिका के भाव-संवेदनाओं के साथ गहराई से जुड़ते हैं। बादलों की आकृति, घनत्व, रंग, गति और स्थिति सबका सीधा संबंध चित्र के भाव से होता है।

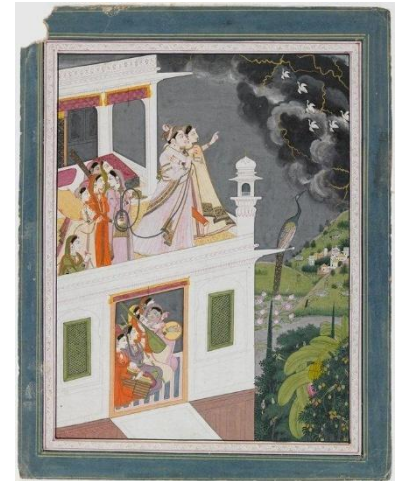
पहाड़ी शैली भारतीय हिमालय चोटियों के दृश्यों की सूक्ष्म, मनोहर चित्र प्रस्तुत करते हैं। जिसमें बादलों का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसमें बसोहली चित्रकला, पहाड़ी लघु चित्रकला की एक विशिष्ट शैली है, जो अपने गाढ़े रंगों, जीवंत रेखाओं और विशिष्ट चेहरे की विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है, जो 17 वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान फली-फूली।

बसोहली शैली - पहाड़ी चित्रकला की शुरुआत बसोहली केन्द्र से होती हैं। जहाँ रंग तीव्र और रेखाएँ कठोर होती हैं। बादलों का चित्रण यहाँ अधिक आरेखीय और सजावटी रहा हैं। अतः बसोहली के कलाकारों ने वर्षा और मौसम की मनोभाषा को अत्यंत प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया हैं। हल्की बूँदा-बांदी मोती जैसी सफेद बिंदुओं और लकीरों के रूप में आती है। जबकि भारी वर्षा मोती-रहित सफेद सीधी रेखा के साथ उभरती हैं। जो घट-आकाश से जुड़ी भावात्मक स्थिति को दर्शाती हैं। बसोहली शैली में बादलों को नागीन के समान वक्र रेखाओं की परतों में दिखाया गया हैं। जो धुएँ की तरह प्रतीत होते हैं-विशेषकर धार्मिक या मिथकीय दृश्यावली में जैसे बुराई का जन्म (चित्र-1) नामक चित्र में दिखाया गया हैं। भागवत पुराण का यह चित्र, 18वीं शताब्दी की बसोहली शैली में बनाया गया हैं। ग्रे के नाटकीय रंगों में चित्रित इस चित्र में सत्रह के सिर और 19 प्राणियों के आंशिक शरीर हैं। जो धुएँ और धुंध के गहरे ग्रे बादलों में छिपे हुए हैं। सभी एक साथ बुराई बनाने के लिए प्रकट होते हैं। जो पृथ्वी को हमेशा के लिए परेशान करेगी। भागवत पुराण से प्रेरित यह चित्र गहरे धूमिल, ग्रे श्याम मेघों में छिपे भयानक चेहरे दर्शाता हैं। ये घट चित्र दहशत , रहस्य और दिव्य चेतना का प्रतीक बनते हैं। बसोहली शैली की रस मंजरी श्रृंखला में भी बादलों का चित्रण भौतिक घट-रूपों के बजाय भावात्मक संकेतों के रूप में होता है। गहरे रंगों, कठोर रेखाओं और मोनोक्रोमैटिक पृष्ठ भूमियों के माध्यम से यह अलौकिक वातावरण, प्रतीक्षा और विरह की मनोभूमि को चित्रित करती हैं।



चित्र-1 बुराई का जन्म, बसोहली शैली, भागवतपुराण, 18वीं शताब्दी

गुलेर शैली - गुलेर शैली ने बसोहली की तीव्रता से सौम्यता की ओर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन दर्शाया : यह शैली अत्यंत सूक्ष्म रेखा, मुलायम रंग टोन विशेषकर हल्के नीले गुलाबी और हरे-और तर्पणीय शेडिंग के उपयोग से पहचानी जाती हैं। बादलों का चित्रण यहाँ केवल दृश्य सजावट नहीं, बल्कि भावनात्मक भाषा का हिस्सा है। गुलेर चित्रों में बादल कोमलता, शांतिपूर्णता और एक प्रकार की प्रत्याशा उत्कंठा का संवाहक बनते हैं। जैसे कृष्ण-राधा के प्रेम दृश्यों में बादल पृष्ठभूमि को गहराई और रसवानता प्रदान करते हैं। गुलेर शैली के मुख्य कलाकार- पंडित सेऊ, मनकु, और नैनसुख ने प्राकृतिक दृश्यों और भावाभिव्यक्ति को उकेरते हुए बादलों को संवेदनशीलता और सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में पेश किया विशेष रूप से नैनसुख की पेंटिंग में प्राकृतिक पृष्ठभूमि में बादल दृश्य को जीवंत और भावनात्मक रस से भर देते हैं गुलेर शैली में चित्रित lovers on a terrace watching an approaching thunderstorm इस चित्र में एक शाही जोड़ा तेज आंधी की ओर आशा भरी निगाह से देखता हैं। जिसमें बिजली चमक के साथ एक गहरे बादल का दृष्टांत मिलता हैं। पूरा दृश्य रोमांटिक और भावात्मक तनाव से भरपूर है। यह बादल प्रेम और अनिश्चितता की प्रतीक्षा को दर्शाया हैं। स्वभाव में नाटकीय, रोमांटिक और वार्तालापात्मक।



चित्र-2 प्रेमी युगल एक आते हुए तूफान को देख रहे हैं लगभग (1780-90), गुलेर शैली

कांगड़ा शैली - कांगड़ा एक अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र, अपनी परिष्कृत और नाजुक शैली के लिए प्रसिद्ध है, जिसकी विशेषता काव्यात्मक गुणवत्ता और जटिल विवरण है। स्थानीय राजपूत शासकों, विशेषकर महाराजा संसार चंद के संरक्षण में, कांगड़ा शैली अपने चरम पर पहुँची, जहाँ प्रेम और भक्ति के विषयों विशेष, रूप से राधा और कृष्ण की कहानियों पर विशेष ध्यान दिया गया। कांगड़ा शैली में राधा और कृष्ण चित्र विषय के साथ-साथ बारहमासा विषय भी कलाकारों का पसंदीदा विषय रहा हैं। इस शैली में बारहमासा का चित्रण प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ भावात्मक रूप भी प्रकट करते हैं। कांगड़ा शैली में बादलों का चित्रण अत्यंत प्राकृतिक और सूक्ष्म छायांकन के साथ हुआ है। बादल केवल आकाश की पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि कथा के भाव को गहराई से व्यक्त करने वाले तत्व बन गए हैं। वर्षा ऋतु के दृश्यों में बादल नीले, स्लेटी और सफेद के मिश्रण से गहरे व हल्के शेड में दिखाए गए हैं। अक्सर बादल क्षितिज के साथ मिलकर गहराई और परिप्रेक्ष्य पैदा करते हैं।

कांगड़ा शैली की 18वीं शताब्दी में चित्रित Krishna and radha watching rain cloud चित्र में बादलों का सौन्दर्यात्मक व भावात्मक ढंग से चित्रण किया गया है। इस चित्र में राधा-कृष्ण एक साथ बरामदे पर खड़े हैं। और पीछे बादलों का घना जमाव बारिश का आगमन इंगित कर रहा हैं। यह दृश्य

आठ संवेदनाएँ - प्रेम, प्रतीक्षा और मौसमी तनाव को भावात्मक रूप से उजागर करता है। बारहमासा की श्रृंखला में विशेष रूप से भादों महीने का चित्रण मानसून की उमंग और प्रेम की गहराई को दर्शाया गया है। बारहमासा श्रृंखला का यह दृश्य प्रेम, प्रकृति और समय के चक्रों के संगम का अनुपम चित्रण है। जिसमें बादलों का आभास भावनात्मक और प्रतीकात्मक गहराई बढ़ाता है।

मानसून के बादल कांगड़ा शैली में अक्सर प्रेम-पीड़ा और मिलन की उत्कंठा को व्यक्त करते हैं। केशव दास की बारहमासा श्रृंखला में "भादों का महीना" चित्रित करते समय बादल, बिजली और वर्षा सभी प्रेम की ओजस्विता और विरह की तीव्रता को दर्शाते हैं। चित्रों में नायिका को बादलों की ओर इशारा इंगित करते हुए दिखाया गया है, मानो वह अपने प्रिय को रोकना चाहती हो। बादल केवल मौसम से जुड़ा दृश्य नहीं बनाते, अपितु उनमें एक आध्यात्मिक और भावनात्मक गहराई होती है। राधा-कृष्ण का आँधी के समय का आलिंगन चित्र इस बात का एक उत्तम उदाहरण है जहाँ लड़का और लड़की बारिश से बचने के लिए एक ही छतरी साझा करते हैं। और उस अँधेरी, बिजली वाले दर्शाया में उनका प्रेम और भी प्रबल हो जाता है। इस शैली में बादल, रंग, पेड़-पौधे, पक्षी - सभी मिलकर प्रेम के भाव को अधिक तीव्रता व सौन्दर्य प्रदान कर रहे हैं। जैसे राधा-कृष्ण एकांत में काले बादल की रात का आनन्द लेते हैं, बिजली की झिलमिलाहट, उड़ते पक्षी, साँझ का शांत वातावरण इन सब में प्रेम और प्रकृति का एक पवित्र संगम दिखता है।



चित्र-3 राधा-कृष्ण बरसात के बादलों को देखते हुए, लगभग 18वीं शताब्दी, कांगड़ा शैली

बादलों का भावनात्मक चित्रण - पहाड़ी शैली के कलाकारों ने बादलों को चित्रों में केवल वर्षा ऋतु या प्राकृतिक पृष्ठभूमि के रूप में नहीं बनाया, बल्कि उन्हें मानवीय भावनाओं के संवाहक के रूप में चित्रित किया। बादलों की आकृति, रंग, और गति के माध्यम से चित्रकार ने विविध रसों व भावनाओं को अभिव्यक्त किया है।

श्रृंगार रस - श्रृंगार रस पहाड़ी शैली का मुख्य रस माना जाता है, नायक- नायिका के मिलन और विरह दोनों अवस्थाओं में बादलों को चित्रित किया है। जब नायक-नायिका वर्षा ऋतु में मिलन करते हैं, तब घने और श्यामल मेघ वातावरण को रूमानी और आकर्षक बना देते हैं। कांगड़ा शैली के गीत गोविंद चित्रों में वर्षा ऋतु के दृश्य बार-बार अंकित हुए हैं, जहाँ बादलों की गहराई नायिका के मन की उत्कंठा को बढ़ती है। बादल यहाँ मिलन की गवाही देते हुए वातावरण को आनंदमय बनाते हैं। कांगड़ा शैली में लगभग 1790ई, में चित्रित "राधा-कृष्ण का संयोग दृश्य" जो जयदेव के गीत गोविंद से लिया गया है। इस चित्र में कृष्ण और राधा एकांत में हैं, पृष्ठभूमि में काले बादल और चमकती बिजली उनके मिलन को और अधिक रोमांचक बना देती हैं।

विरह रस - विरह चित्रण में बादलों का महत्व और भी अधिक गहरा हो जाता है। विरहिणी नायिका के लिए काले बादल उसके अकेलेपन और पीड़ा का प्रतीक बनते हैं। बादलों की गड़गड़ाहट उसकी व्याकुलता और आँसुओं को विस्तार से व्यक्त करते हैं। कई चित्रों में नायिका खिड़की से बाहर झाँकते हुए या सखी को अपने दुख के बारे में कहते हुए चित्रों में दिखाया गया है, और आकाश में छाए बादल उसके हृदय की उदासी को तीव्र कर देती हैं। गढ़वाल शैली में 18वीं शताब्दी का चित्रित चित्र "विरहिणी नायिका वर्षा ऋतु में" नायिका अकेली खड़ी है, दूर आकाश में गहरे बादल छाए हुए हैं, यह दृश्य उसकी विरह पीड़ा और नायक की प्रतीक्षा को मूर्त रूप देता है।

भक्ति रस - भक्ति रस से संबंधित चित्रों में बादलों को दैवीय उपस्थिति और करुणा के प्रतीक रूप में चित्रित किया गया है। जब भक्त भगवान से मिलने की अभिलाषा करता है, तो बादल उसकी विनती के साक्षी बनते हैं। कृष्ण-भक्ति से जुड़े कांगड़ा और मंडी शैली के चित्रों में बादल कृष्ण के चारों ओर ईश्वरत्व का आभास कराते हैं। कई बार बादल, इंद्रजाल या ईश्वरीय लीलाओं को भी व्यक्त करते हैं। जैसे कि मंडी शैली का "कृष्ण गोवर्धन पर्वत उठाते हुए" - इसमें आकाश में घिरे काले मेघ और वर्षा देवता इंद्र की गर्जना को दर्शाते हैं। यहाँ बादल भक्ति और ईश्वर की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रतीक बनते हैं।

शान्त रस - पहाड़ी शैली के कुछ चित्रों में बादल को शांत और सौम्य वातावरण का निर्माण करते हुए दिखाया गया है। हल्के, पतले और सफेद बादल आकाश में तैरते हुए दिखाई देते हैं, जो चित्र को सुकून और संतुलन प्रदान करते हैं। पहाड़ी शैली के प्राकृतिक दृश्यों में ऐसे बादल दर्शक के मन में शांति और समाधि का भाव उत्पन्न करते हैं। कांगड़ा शैली का "शांत प्राकृतिक दृश्य (19वीं शताब्दी)" जिसमें पहाड़ों की चोटियों के ऊपर हल्के बादल चित्रित हैं। यह दृश्य शांति और ध्यान का वातावरण रचता है।

बादलों की कलात्मक विशेषताएँ-

पहाड़ी शैली में बादल एक दृश्यात्मक कवि की तरह कार्य करते हैं- कभी आकाश को सजाते हैं, कभी रचना में गहराई और परिप्रेक्ष्य लाते हैं, तो कभी कथा की लय और भाव को बढ़ाते हैं। बादल रंगों का संतुलन बनाते हैं, आकाश और भूमि के बीच दृष्टिगत जोड़ तैयार करते हैं, भावना और वातावरण का

निर्माण करते हैं, संरचना में गति और लय को जोड़ते हैं, पहाड़ी चित्रकार बादलों को केवल यथार्थवादी रूप में नहीं, बल्कि शिल्पगत अलंकरण के रूप में गढ़ते हैं- जहाँ प्रत्येक बादल एक सजावटी पैटर्न, रंग-ब्लॉक और भाव-प्रवाह का हिस्सा बनते हैं।

- पहाड़ी चित्रकारों ने बादलों को मात्र पृष्ठभूमि का हिस्सा न मानकर उन्हें जीवंत और गतिशील रूप दिया, कहीं बादल फूले हुए कपास जैसे दिखाई देते हैं तो कहीं घुमड़ते हुए गहरे, भारी बादल दृश्य को नाटकीय बनाते हैं, कहीं वे नीले, धूसर और काले रंगों की छाया में अद्भुत आभा उत्पन्न करते हैं।
- बादल केवल प्राकृतिक रूप ही नहीं दर्शाते, बल्कि भावनात्मक और रसात्मक अभिव्यक्ति को भी व्यक्त करते हैं। जैसे-श्रृंगार रस में बादल नायक-नायिका के मिलन की पृष्ठभूमि बनाकर वातावरण को रोमांटिक बनाते हैं, तो विरह रस में बादल नायिका की पीड़ा को गहन बनाते हैं और उसकी तनहाई को उभारते हैं, भक्ति रस में कृष्ण लीला चित्रों में बादल वातावरण को दिव्य और रहस्यमयी बनाते हैं।
- पहाड़ी शैली के कलाकारों ने बादलों के लिए रंगों का सूक्ष्म और प्रतीकात्मक प्रयोग किया है। कलाकारों ने कहीं हल्के नीले और सफेद बादल को शांति और सौम्यता का संकेत देते हुए दिखाया है। तो कहीं धूसर या काले बादल को उत्कंठा, चिंता और गहन भावनाओं का प्रतीक के रूप में दिखाया है। कहीं चित्रों में सुनहरी आभा वाले बादल को भोर या संध्या का दैवीय सौन्दर्य के रूप में दर्शाया गया है।
- पहाड़ी शैली में बादलों की गोलाई और वक्र रेखाएँ कोमलता का भाव जगाती हैं। कहीं लहरदार आकृतियाँ, तो कहीं सघन गुच्छों के रूप में बादल दिखाई देते हैं इस प्रकार के रेखांकन से चित्रों में गति और प्रवाह का अनुभव होता है।
- पहाड़ी शैली में बादल चित्रों में केवल अलंकरण नहीं हैं, बल्कि वे पूरे परिदृश्य का मूड तय करते हैं। जैसे- मानसून दृश्यों में वर्षा की गहनता और ताजगी व प्रकृति और नायिका के बीच सामंजस्य तो कभी नाटकीय आकाश, जो चित्र को नाट्य मंच जैसा बना देता है।

निष्कर्ष –

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पहाड़ी लघु चित्रकला में बादलों का चित्रण मात्र प्राकृतिक दृश्य का भाग न होकर भावनात्मक संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। बादलों की आकृति रंग-संयोजन और गति ये सब मिलकर चित्र में रसात्मक वातावरण गढ़ते हैं। कांगड़ा, गढ़वाल, मंडी, बसोहली और चम्बा – प्रत्येक उप शैली ने बादलों को अपनी स्थानीय प्रकृति, दरबारी सौन्दर्य-बोध और साहित्यिक प्रेरणा के अनुरूप ढाला है। कांगड़ा और गढ़वाल शैली में यह श्रृंगार और विरह का प्रतीक बने हैं। वहीं मंडी और बसोहली शैली ने बादलों को नाटकीयता और शक्ति का रूप दिया। और चम्बा शैली ने इन्हें दिव्यता और शांति का संकेत माना। इस प्रकार बादल मानव-प्रकृति-दैवी त्रयी को जोड़ने वाला जीवंत सेतु हैं। वे दृश्य को ऋतु और भूगोल से बाँधते हैं, पात्रों की आन्तरिक स्थितियों का भाष्य करते हैं। और दर्शक के भीतर सौन्दर्य, करुण, आनंद और शांति की तरंगें जगाते हैं। मेघ पहाड़ी शैली की "पृष्ठभूमि" नहीं- अर्थ सृष्टि का सक्रिय नायक हैं। इन्हीं मेघों में कला का सौन्दर्य, साहित्य का भाव और संस्कृति की स्मृति एक साथ आकार लेती हैं। और यहीं इस परंपरा की अमिट प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. पहाड़ी मिनेचर पेंटिंग (1980) खंडालावला
2. बसोहली पेंटिंग (1959) एम.एस. रंधावा
3. कांगड़ा पेंटिंग ऑन लव (1962) एम.एस. रंधावा
4. भारतीय लघु चित्रकला (1982) राज कुमार टंडन
5. भारतीय लघु चित्रकला (1974) ओ.पी. शर्मा
6. Sharma, S.K. (2015). Pahari painting: a study in the context of indian Aesthetics.
7. Archer, W.G.(1952). Indian Paintings from the Punjab hills.

